

# MSME PULSE

APRIL 2020



TransUnion.  CIBIL

 sidbi

विश्लेषणात्मक संपर्क  
ट्रान्सयूनियन सिबिल

विपुल महाजन  
vipul.mahajan@transunion.com

सलोनी सिन्हा  
saloni.sinha@transunion.com

सिडबी  
रुद्र प्रसन्न मिश्र  
rudrapmishra@sidbi.in

# विषयसूची

कार्यकारी सारांश

2

वाणिज्यिक ऋण - संविभाग और अनर्जक आस्ति की प्रवृत्तियों

4

एमएसएमई ऋण बाजार में हिस्सेदारी : सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा खीए हुए भाग की पुनःप्राप्ति:

5

सूक्ष्म सेगमेंट में ऋण संवितरण

7

चलनिधि स्थिति

11

वाणिज्यिक उधारियों में अनर्जक आस्ति का प्रवाह

12

अधिश्रृण संबंधी जोखिम का स्वरूप

14

संकटकाल में संरचनात्मक दृष्टि से सुरढ़ एमएसएमई उद्यम:

15

परिदृश्य 1: जून'18 में चूक की दर

17

परिदृश्य 2: जून'19 में चूक की दर

18

एमएसएमई की मौजूदा चलनिधि और ऋणभारिता की स्थिति

19

निष्कर्ष

20

## कार्यकारी सारांश

**एमएसएमई के वाणिज्यिक ऋणों में सबसे कम चूक दर जारी:** सभी एमएसएमई घटकों की चूक दरें बड़े कॉर्पोरेट एनपीए दरों की तुलना में लगातार रूप से कम रही हैं। सूक्ष्म सेगमेंट के एमएसएमई इकाईयों की एनपीए दरें स्थिर बनी हुई हैं। माइक्रो लोन<sup>1</sup> सेगमेंट में <10 लाख आकार के ऋणों की चूक दरों में कमी देखी गई है। हालांकि, लघु और मध्यम सेगमेंट के एनपीए की दरों में पिछली तीन तिमाहियों में लगातार वृद्धि जारी है।

**सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की एमएसएमई ऋण बाजार में हिस्सेदारी बढ़ी:** सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक (पीएसबी) लंबे समय से लगातार बाजार में हिस्सेदारी खो रहे थे। एनबीएफसी और निजी बैंकों की बाजार में हिस्सेदारी में वृद्धि पीएसबी सेगमेंट द्वारा अपना हिस्सा खोने का कारण थी। तथापि दिसंबर 19 की समाप्त तिमाही में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने पिछले कुछ वर्षों में पहली बार एमएसएमई ऋण बाजार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाई है। दिसम्बर 19 तक पीएसबी की एमएसएमई ऋणों में बाजार हिस्सेदारी 49.8% थी, जिसमें सूक्ष्म सेगमेंट में उसकी बाजार हिस्सेदारी 59.2% पर उच्चतम थी।

**2019 में सूक्ष्म सेगमेंट में ₹92,262 करोड़ के नए ऋण संवितरण हुए :** ऋणदाताओं ने सूक्ष्म सेगमेंट को ₹92,262 करोड़ के नए ऋणों का संवितरण किया। जबकि निजी बैंकों और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा सूक्ष्म सेगमेंट को संवितरित नए ऋणों की लगभग समान हिस्सेदारी रही है, उप-सेगमेंट स्तर पर बारीकी से विश्लेषण करने पर विकास के रुझान में काफी अंतर प्रतीत होता है।

**2019 के लिए सूक्ष्म सेगमेंट में नए ऋण संवितरणों में महाराष्ट्र की सबसे बड़ी हिस्सेदारी थी; राजस्थान ने इसमें सबसे तेज वृद्धि दर्ज की:** महाराष्ट्र, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश सह तेलंगाना ने सूक्ष्म ऋण सेगमेंट में नए संवितरणों का सबसे बड़ा हिस्सा प्राप्त किया। जबकि राजस्थान, दिल्ली और मध्य प्रदेश ने सूक्ष्म सेगमेंट में नए संवितरणों में सबसे तेज वृद्धि दर्शाई। तथापि, जब ऋणदाता श्रेणीवार का विश्लेषण किया जाता है तो रुझान भिन्न परिलक्षित होते हैं- उदाहरण के लिए, उत्तर प्रदेश में सूक्ष्म सेगमेंट ऋण परिदृश्य में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का वर्चस्व है; जबकि तमिलनाडु में निजी बैंकों का और राजस्थान में गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) का वर्चस्व है।

**संरचनात्मक रूप से मजबूत एमएसएमई इकाईयों की लॉकडाउन में सबसे कम प्रभावित होने की संभावना है:** किसी भी इकाई पर लॉकडाउन का प्रभाव कई कारकों पर निर्भर करेगा; क्रेडिट लीवरेज और इकाई की चलनिधि स्थिति, दो सबसे महत्वपूर्ण कारक हैं। इन इकाईयों के सीएमआर और उपयोग दरों के अध्ययन द्वारा इकाई स्तर पर इन दो कारकों पर गहरी अंतर्दृष्टि प्राप्त की जा सकती है। जीएसटी कार्यान्वयन, आई एल एंड एफ एस संकट, और एनपीए दरों में वृद्धि जैसी पिछली घटनाओं पर इन दो तत्वों को परखने पर हमने देखा है और निष्कर्ष निकाला है कि कम लीवरेज और उच्च चलनिधि वाली इकाईयों में इन घटनाओं के दौरान सबसे कम चूक दरें रहीं।

हालांकि लॉकडाउन का प्रभाव पहले की घटनाओं की तुलना में अधिक स्पष्ट हो सकता है, लेकिन मिथ्याभ्यास का मुख्य सार यह बताता है कि 'संरचनात्मक रूप से मजबूत एमएसएमई इकाईयां सबसे कम प्रभावित होंगी'। लॉकडाउन से पहले

एमएसएमई इकाईयों की संरचनात्मक स्थिति पर अध्ययन का निष्कर्ष है कि 3 में से लगभग 2 एमएसएमई इकाईयां इस लॉकडाउन से उबरने के लिए पूरी तरह तैयार हैं और 30% बहुत दृढ़ता से डटी हुई हैं।

दिसंबर '19 की अवधि में व्यावसायिक ऋण एक्सपोज़र ₹64.04 लाख करोड़ रुपए था, जिसमें 3.9% वर्षानुवर्ष विस्तार हुआ : भारत में जनवरी 20 तक की अवधि के लिए तुलन-पत्र पर कुल वाणिज्यिक ऋण एक्सपोज़र ₹64.45 लाख करोड़ रुपए रहा, जो कि दिसंबर 19 में ₹64.04 लाख करोड़ रुपए था। इसमें से जनवरी 20 तक एमएसएमई में ₹17.75 लाख करोड़ का क्रेडिट एक्सपोजर है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि एमएसएमई सेगमेंट के अधिकांश उप-घटकों के ऋण एक्सपोजर में कुछ तिमाहियों के दौरान कमी आई है। बड़े नैगम सेगमेंट में ₹46.7 लाख करोड़ क्रेडिट एक्सपोजर है और उसमें 6.3% का वर्षानुवर्ष विस्तार हुआ है।

एमएसएमई इकाईयों के लिए कार्यशील पूंजी सीमाओं की उपयोगिता दर कम हो रही है: एमएसएमई इकाईयों में कार्यशील पूंजी सीमाओं का उपयोग स्तर की कमी के कारण इस सेगमेंट के ऋण एक्सपोजर में भी एक कारण रहा है। निजी बैंकों के लिए उपयोगिता दरों में तेजी से गिरावट आई है जबकि पीएसबी में ये मद्धम रहे हैं।



<sup>1</sup> इकाई स्तर पर एकत्रित क्रेडिट एक्सपोजर के आधार पर वर्गीकृत वाणिज्यिक ऋण, अति लघु : <10लाख; सूक्ष्म 1: 10 लाख -50 लाख; सूक्ष्म 2: 50 लाख -1 करोड़; लघु : ≥1 करोड़ <15 करोड़ ; मध्यम: ≥ 15करोड़ <50करोड़ ; बड़े ≥50 करोड़। सूक्ष्म सेगमेंट में अति लघु, माइक्रो 1 और माइक्रो 2 सेगमेंट शामिल हैं। एमएसएमई सेगमेंट सूक्ष्म, लघु और मध्यम घटकों का योग है



## वाणिज्यिक ऋण - संविभाग और अनर्जक आस्ति की प्रवृत्तियाँ

भारत में जनवरी 20 तक की अवधि के लिए तुलन-पत्र पर कुल वाणिज्यिक ऋण एक्सपोजर ₹64.45 लाख करोड़ रुपए रहा, जो कि दिसंबर 19 में ₹64.04 लाख करोड़ रुपए था। इसमें से जनवरी 20 तक एमएसएमई में ₹17.75 लाख करोड़ का क्रेडिट एक्सपोजर है और अधिकांश उप-घटकों के ऋण एक्सपोजर में कुछ तिमाहियों में कमी आई है। जनवरी 20 तक बड़े नैगम सेगमेंट में ₹46.7 लाख करोड़ क्रेडिट एक्सपोजर रहा है और उसमें दिसंबर 18 से दिसंबर 19<sup>2</sup> तक की अवधि के लिए 6.3% का वर्षानुवर्ष विस्तार हुआ है।

प्रदर्श्य1: समग्र तुलन-पत्रों पर वाणिज्यिक ऋण एक्सपोजर (₹ लाख करोड़)

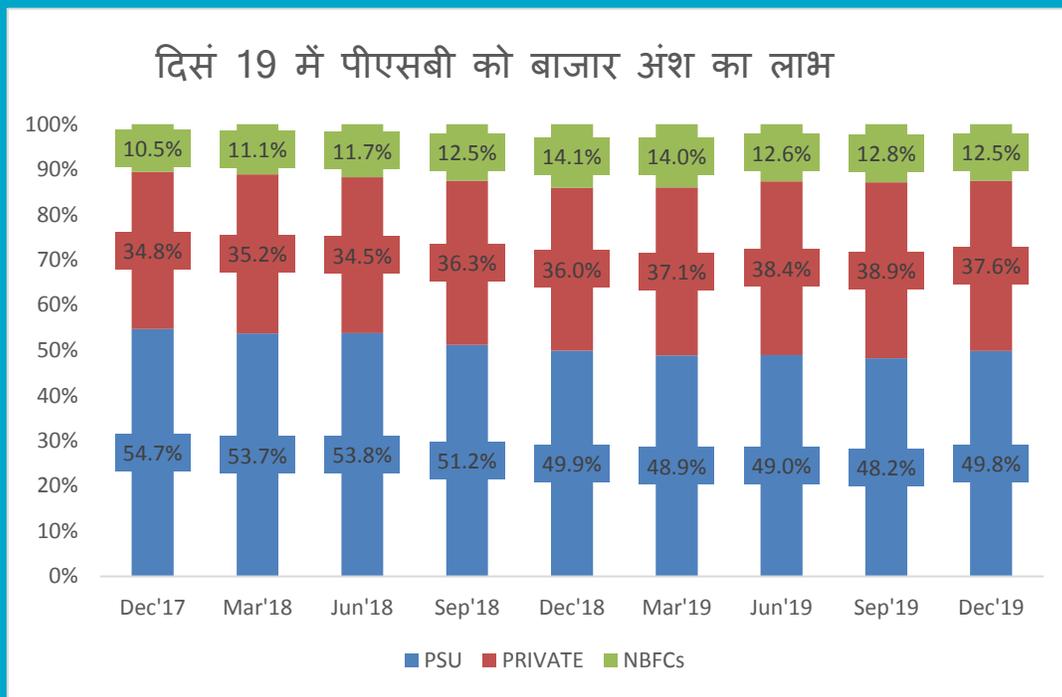
	अति लघु < ₹ 10 लाख	सूक्ष्म1 ₹ 10-50 लाख	सूक्ष्म 2 ₹ 50 लाख-1करोड़	लघु ₹ 1-15 करोड़	मध्यम ₹15-50 करोड़	बड़े >₹ 50 करोड़	समग्र
दिसं'17	0.75	1.85	1.26	7.67	4.32	37.16	53.01
मार्च'18	0.83	1.97	1.35	8.27	4.56	40.61	57.60
जून'18	0.84	2.00	1.37	8.39	4.58	39.27	56.45
सितं'18	0.84	2.05	1.41	8.54	4.65	42.68	60.17
दिसं'18	0.89	2.20	1.50	8.91	4.79	43.35	61.63
मार्च'19	0.92	2.26	1.55	9.16	4.95	46.00	64.85
जून'19	0.89	2.22	1.52	9.04	4.82	46.30	64.80
सितं'19	0.89	2.23	1.52	8.93	4.74	46.74	65.04
दिसं'19	0.93	2.15	1.44	8.74	4.68	46.10	64.04
वर्षानुवर्ष संवृद्धि	4.7%	-2.2%	-3.6%	-1.9%	-2.2%	6.3%	3.9%
जन'20	0.88	2.17	1.46	8.72	4.51	46.72	64.45

<sup>2</sup> इकाई स्तर पर एकत्रित क्रेडिट एक्सपोजर के आधार पर वर्गीकृत वाणिज्यिक ऋण, अति लघु : <10लाख; सूक्ष्म 1: 10 लाख -50 लाख; सूक्ष्म 2: 50 लाख -1 करोड़; लघु : ≥1 करोड़ <15 करोड़ ; मध्यम: ≥ 15करोड़ <50करोड़ ; बड़े ≥ 50 करोड़। सूक्ष्म सेगमेंट में अति लघु, माइक्रो 1 और माइक्रो 2 सेगमेंट शामिल हैं।

## एमएसएमई ऋण बाजार में हिस्सेदारी : सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा खोए हुए भाग की पुनःप्राप्ति

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक पारंपरिक रूप से एमएसएमई क्षेत्र के प्रमुख ऋणदाता रहे हैं। पिछले कुछ तिमाहियों में निजी बैंकों और एनबीएफसी ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के साथ एमएसएमई क्षेत्र की बड़ी हिस्सेदारी के लिए कड़ी प्रतिस्पर्धा की है। हालाँकि, दिसंबर 19 की तिमाही से रुझान में बदलाव होने लगा है, जहां सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने अपने खोए हुए बाजार अंश की पुनःप्राप्ति की है और सितंबर 19 बाजार हिस्सेदारी 48.2% से बढ़कर दिसंबर 19 में 49.8% हो गई है।

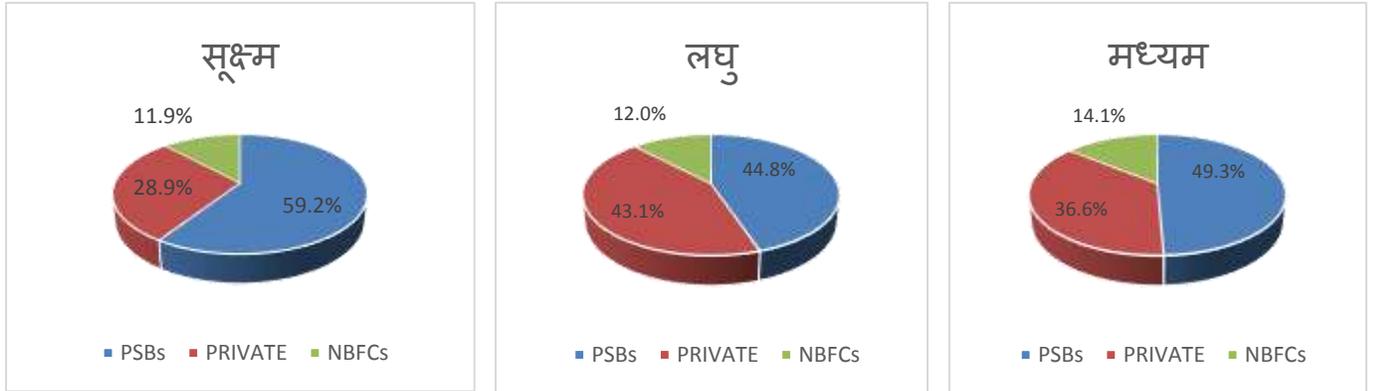
### प्रदर्श्य 2 : 2 वर्षों के दौरान में एमएसएमई में ऋणदाताओं का आनुपातिक हिस्सा



\*बाजार अंश विश्लेषण के लिए अन्य ऋणदाताओं को शामिल नहीं किया गया है

**सेगमेंटों में उधारदाताओं का हिस्सा:** पीएसबी सूक्ष्म सेगमेंट उधारकर्ताओं को ऋण प्रदान करने में प्रमुख योगदानकर्ता बने हुए हैं, जो इस सेगमेंट में लगभग **60%** हिस्सेदारी रखते हैं। सूक्ष्म उद्यमों के वित्तीय समावेश को सक्षम करने में पीएसबी की एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उधारकर्ताओं के लघु सेगमेंट में पीएसबी और निजी बैंकों की हिस्सेदारी समान है, जिनमें से प्रत्येक का बाजार हिस्सा लगभग **44%** है। मध्यम सेगमेंट में बड़े टिकट आकार एमएसएमई ऋण हैं जिसमें फिर से पीएसबी बड़े पैमाने पर हावी हैं।

**प्रदर्श्य 3 : एमएसएमई सेगमेंटों में ऋणदाताओं का हिस्सा**



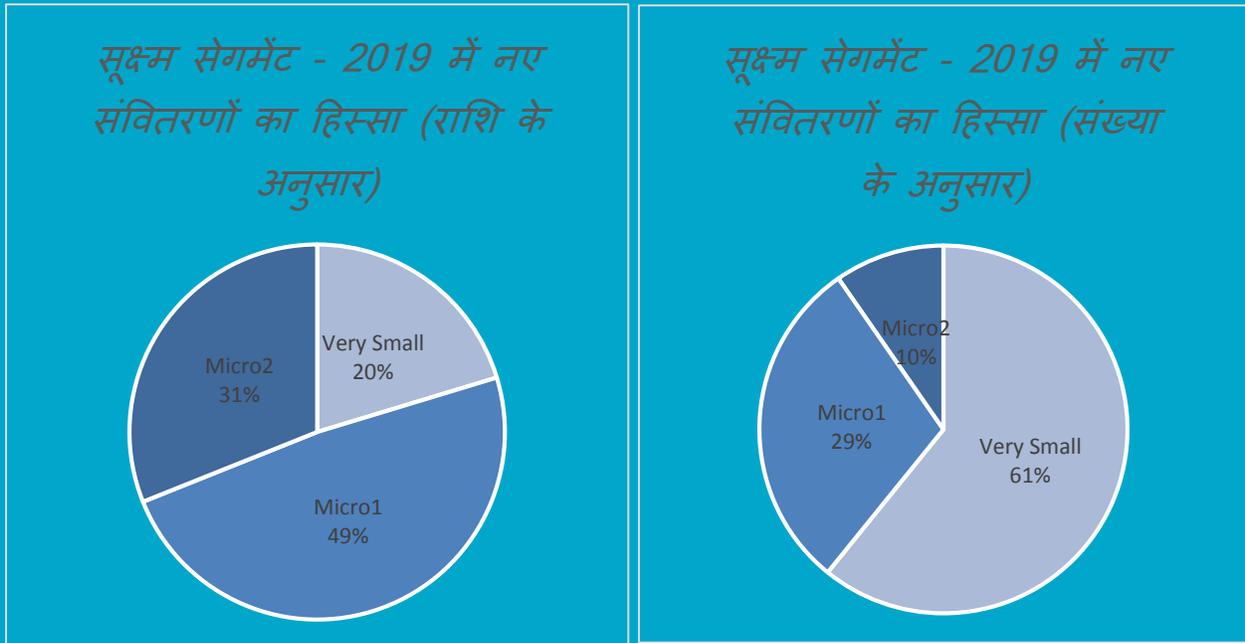
## सूक्ष्म सेगमेंट में ऋण संवितरण

जैसा कि प्रदर्श्य<sup>1</sup> से देखा जा सकता है, एमएसएमई ऋणों के अधिकांश उप-घटकों में ऋण एक्सपोजर पिछली कुछ तिमाहियों से कम हुआ है। तथापि, नए संवितरणों पर किए गए अध्ययन से पता चलता है कि 2019 में सूक्ष्म ऋण सेगमेंट<sup>3</sup> को ₹92.3 हजार करोड़ का ऋण संवितरण किया गया।

### ऋणदाता द्वारा नए ऋण और उसका आकार

एमएसएमई इकाइयों के सूक्ष्म ऋण सेगमेंट में, बहुत कम ऋण आकार (<10 लाख) की संवितरित ऋण सुविधाओं की संख्या का सबसे बड़ा हिस्सा है। संवितरित राशि के संदर्भ में सूक्ष्म -1 आकार के ऋणों का (10लाख -50लाख) हिस्सा ताजा संवितरित ऋण का सबसे बड़ा हिस्सा है।

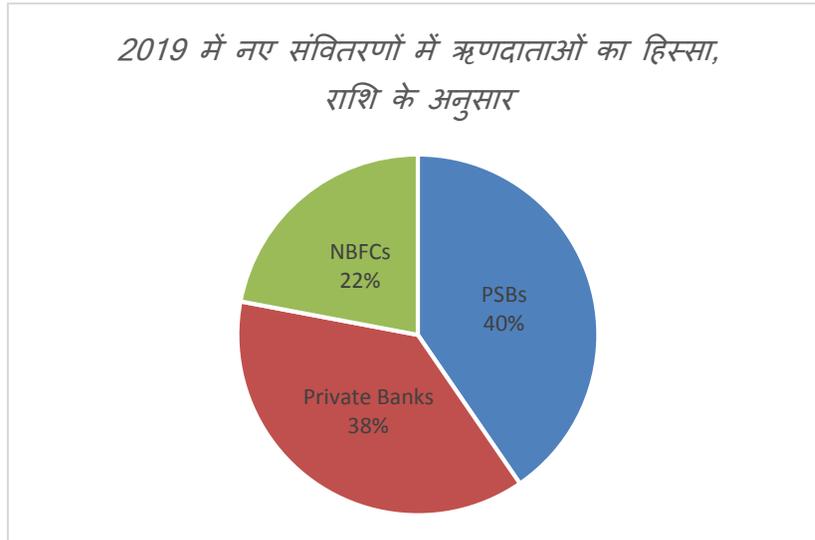
### प्रदर्श्य<sup>4</sup> : सूक्ष्म सेगमेंट में नए ऋण संवितरण का आनुपातिक हिस्सा



<sup>3</sup> इकाई स्तर पर एकत्रित क्रेडिट एक्सपोजर के आधार पर वर्गीकृत वाणिज्यिक ऋण, अति लघु : <10लाख; सूक्ष्म 1: 10 लाख -50 लाख; सूक्ष्म 2: 50 लाख -1 करोड़; लघु : ≥1 करोड़ <15 करोड़ ; मध्यम: ≥ 15करोड़ <50करोड़ ; बड़े ≥ 50 करोड़। सूक्ष्म सेगमेंट में अति लघु, माइक्रो 1 और माइक्रो 2 सेगमेंट शामिल हैं।

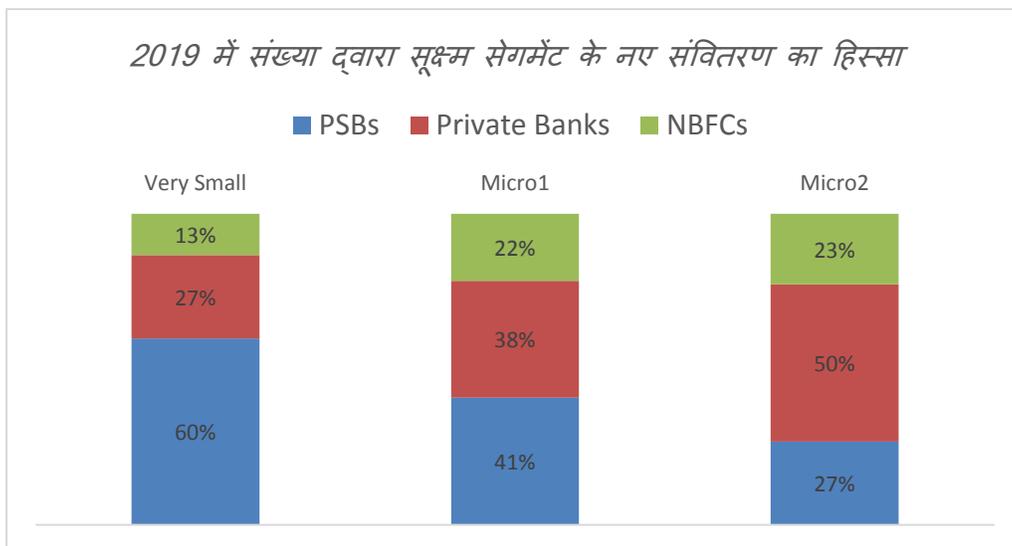
ऋणदाता प्रकार वार वर्गीकरण संदर्भ, एमएसएमई इकाईयों के सूक्ष्म सेगमेंट में संवितरित किए गए नए ऋणों की राशि में पीएसबी और निजी बैंकों दोनों की लगभग समान हिस्सेदारी है। एनबीएफसी भी सूक्ष्म सेगमेंट को ऋण देने में योगदान करते हैं- वर्ष 2019 में इस सेगमेंट को दिए गए प्रत्येक ₹5 ऋण में से ₹1 का ऋण एनबीएफसी द्वारा दिया गया है।

**प्रदर्श्य5 : सूक्ष्म सेगमेंट को संवितरित नए ऋणों का ऋणदातावार हिस्सा**



तथापि, ऋण आकार स्तर पर बारीकी से विश्लेषण किए जाने पर रुझान बहुत अलग दिखाई देते हैं। सूक्ष्म सेगमेंट में ऋण आकार के अनुसार नए संवितरणों में ऋणदाता वार बाजार हिस्सेदारी में स्पष्ट विस्थापन है। ऋण का आकार जितना ज्यादा है , निजी बैंकों और एनबीएफसी द्वारा नए संवितरण में बाजार हिस्सेदारी उतनी ही अधिक है। अति सूक्ष्म सेगमेंट (<10 लाख) में, पीएसबी 60% की हिस्सेदारी के साथ नए ऋण संवितरणों में शीर्ष पर हैं, जिसमें सूक्ष्म 2 सेगमेंट (50लाख से 1करोड़ ) में 27% तक गिरावट हो जाती है। ऋण आकार बढ़ने पर निजी बैंकों और एनबीएफसी की प्रवृत्ति उलट जाती है और दोनों की हिस्सेदारी बढ़ जाती है।

**प्रदर्श्य6 : संख्या के अनुसार ऋणदाताओं और ऋण के आकार के लिए सूक्ष्म सेगमेंट में नए संवितरणों का हिस्सा**



## राज्य और ऋणदाता श्रेणी द्वारा नए ऋण

राज्यों में सूक्ष्म सेगमेंट में नए संवितरण भी हुए हैं। 2019 के दौरान शीर्ष 15 राज्यों में कुल ऋण संवितरण राशि का 80% से अधिक राशि संवितरण कि गयी। महाराष्ट्र और तमिलनाडु नए संवितरण के 1/5 वें हिस्सेदार हैं। शीर्ष 15 राज्यों में, 2018 की तुलना में 2019 में सबसे अधिक नए संवितरण में उच्चतम दर वृद्धि राजस्थान द्वारा की गई है, जबकि सबसे कम वृद्धि ओडिशा में हुआ है।

### प्रदर्श्य7: 2019 के दौरान एमएसएमई के सूक्ष्म ऋण सेगमेंट में राज्य-वार नए ऋणों संवितरण

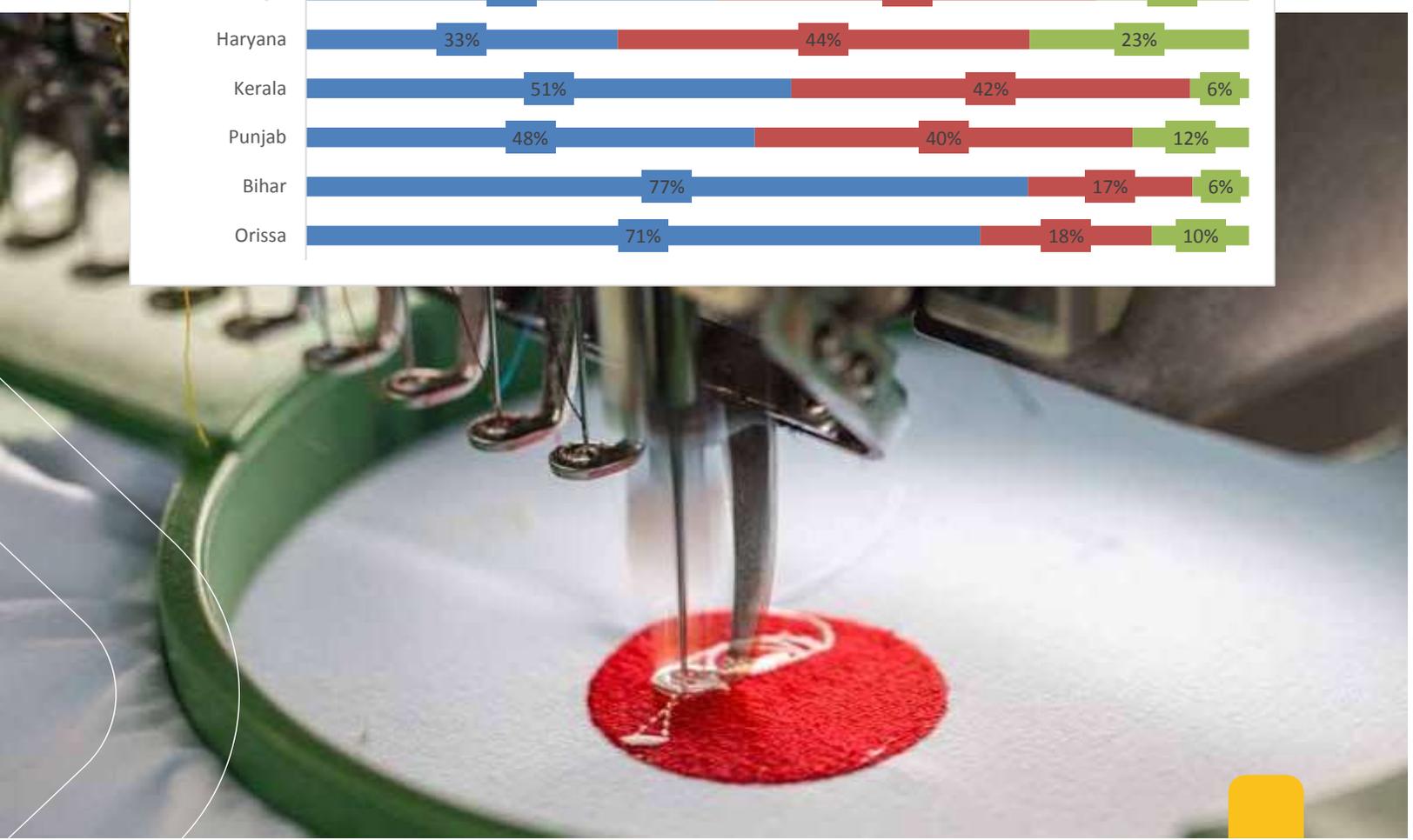
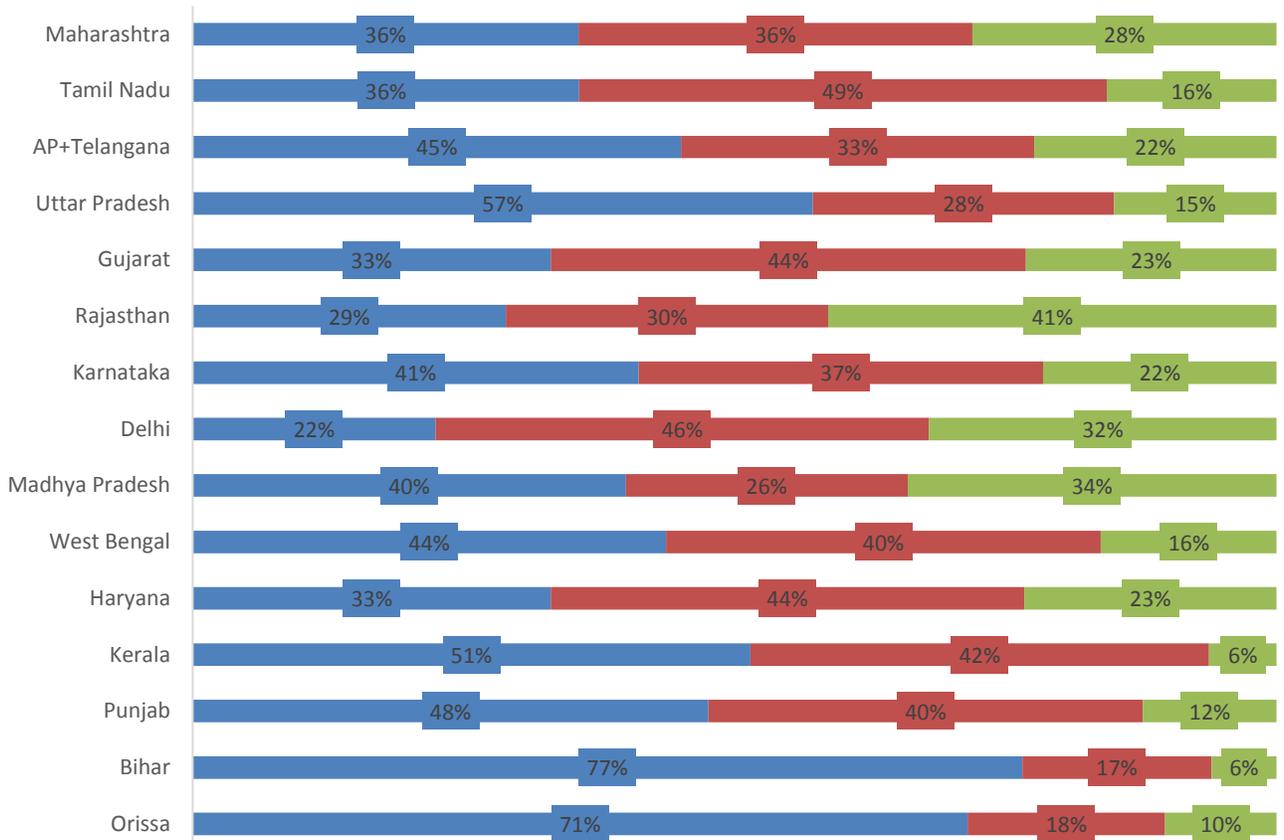
वर्ष 2019 के दौरान 15 शीर्ष राज्यों में एमएसएमई के सूक्ष्म ऋण सेगमेंट में नए ऋण संवितरण			
राज्य	राशि ₹करोड़ में	हिस्सेदारी%	वर्षानुवर्ष वृद्धि
महाराष्ट्र	10,293	11%	1%
तमिलनाडु	8,923	10%	-4%
आन्ध्र+तेलंगाना	7,031	8%	-5%
गुजरात	6,673	7%	-4%
उत्तर प्रदेश	6,408	7%	-9%
राजस्थान	6,052	7%	15%
कर्नाटक	4,653	5%	4%
दिल्ली	4,201	5%	14%
मध्य प्रदेश	3,859	4%	10%
पश्चिम बंगाल	3,696	4%	3%
हरियाणा	3,539	4%	-4%
केरल	3,429	4%	2%
पंजाब	2,821	3%	-9%
बिहार	1,909	2%	-3%
ओडिशा	1,534	2%	-13%
शेष राज्य	17,240	19%	6%

तथापि, जब ऋणदाता के प्रकार का विश्लेषण किया जाता है, तो रुझान प्रत्येक राज्य के लिए अलग-अलग होते हैं। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक (पीएसबी) उत्तर प्रदेश, बिहार और उड़ीसा में सूक्ष्म सेगमेंट को नए ऋणों का प्रमुख प्रदाता रहे हैं। इन राज्यों में निजी बैंकों और एनबीएफसी द्वारा नए ऋण में योगदान 23% जितना कम है। हालांकि, निजी बैंकों ने तमिलनाडु और गुजरात में प्रमुख भूमिका निभाई है और राजस्थान के बाजार में एनबीएफसी प्रमुख खिलाड़ी रहे हैं।

**प्रदर्श्य8: ऋणदाताओं द्वारा वर्ष 2019 में सूक्ष्म ऋण संबंधी नए ऋणों के संवितरण की राज्यवार हिस्सेदारी**

सूक्ष्मवित्त सेगमेंट : ऋणदाताओं द्वारा वर्ष 2019 में ऋणों के संवितरण की राज्यस्तरीय हिस्सेदारी

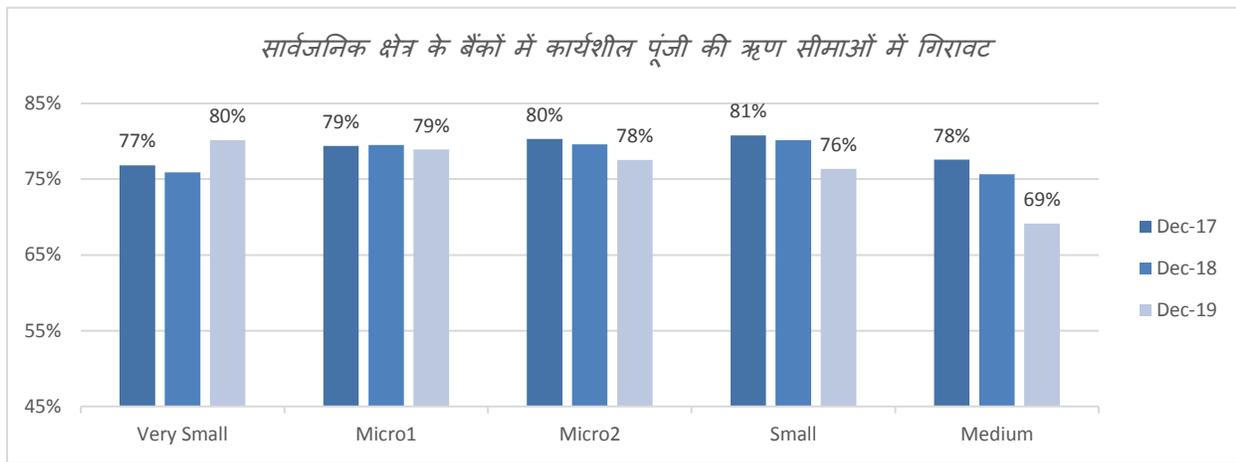
■ PSBs ■ Private ■ NBFC



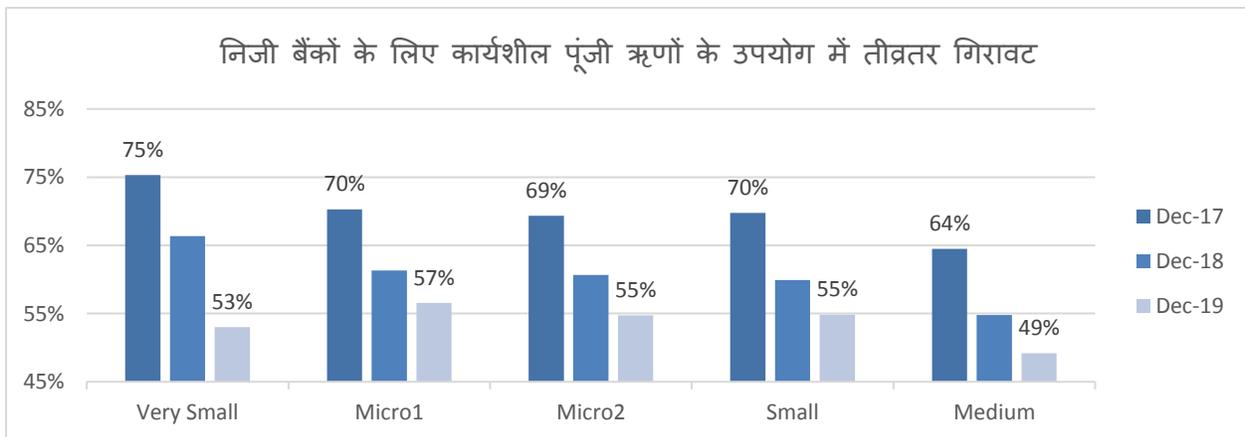
## चलनिधि स्थिति

एमएसएमई क्षेत्र में समग्र बकाया ऋणों के संकुचित होने के मूल में सभी खंडों में कार्यशील पूंजी के उपयोग की दरों में कमी का होना है। कार्यशील पूंजी के उपयोग को कार्यशील पूंजी ऋण में मंजूर की गई कुल ऋण-सीमा और कुल बकाया राशि के अनुपात से परिभाषित किया जाता है। कार्यशील पूंजी उपयोग के संबंध में एमएसएमई के विभिन्न खंडों में भिन्न-भिन्न ऋणदाताओं की अलग-अलग श्रेणियों को ध्यान में रखकर दिसं.'17 से दिसं.'19 तक की अवधि की पड़ताल की गई है। इस अध्ययन से यह पता चलता है कि अपवादस्वरूप बहुत छोटे हिस्से को छोड़ दिया जाए तो, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के लिए सभी क्षेत्रों में कार्यशील पूंजी संबंधी ऋणों में गिरावट आई है। तथापि, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के लिए उपयोग संबंधी स्तर में यह गिरावट बहुत मामूली है। जबकि, निजी क्षेत्र के बैंकों के लिए सभी क्षेत्रों में यह गिरावट अपेक्षाकृत अधिक है।

### प्रदर्श्य9 : सा.क्षे.बैं कि कार्यशील पूंजी की ऋण-सीमाओं में उपयोग-दर



### प्रदर्श्य10: नि.क्षे.बैं का कार्यशील पूंजी की ऋण-सीमाओं में उपयोग-दर



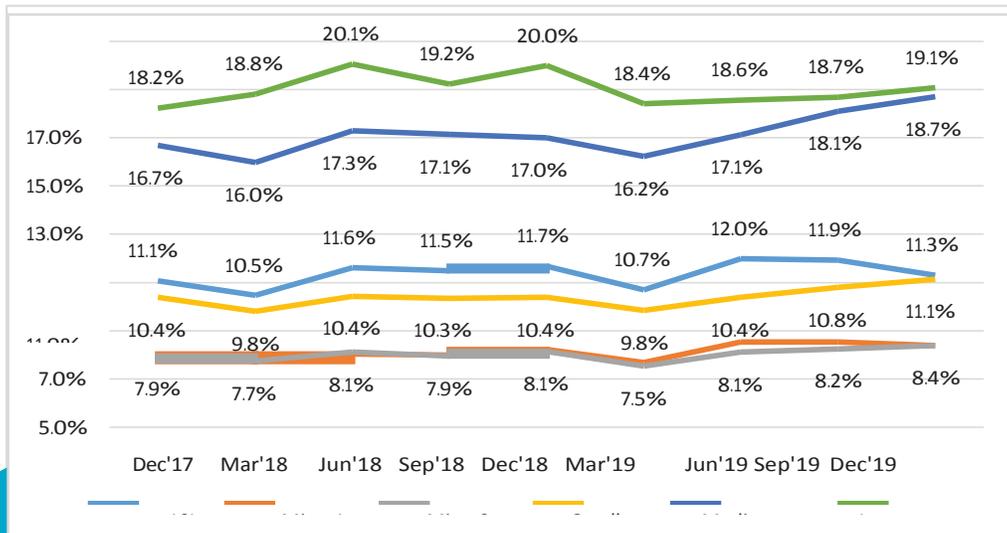
तथापि, ऋणदात्री संस्थाओं द्वारा ऋण-मंजूरी के प्रवाह को कायम रखा गया है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने दिस'18 के अपने एमएसएमई के बकाया ऋण का 17%, 2019 के दौरान नई मंजूरीयों /नवीनीकरण के रूप में प्रदान किया। वहीं, निजी क्षेत्र के बैंकों ने दिस'18 के अपने एमएसएमई के बकाया ऋण का 20%, 2019 के दौरान ऋण स्वरूप प्रदान किया हैं। तथापि, मौजूदा चलनिधि संकट के कारण, एनबीएफसी की गति थोड़ी धीमी पड़ गई है, पर एनबीएफसी द्वारा प्रदान किए गए ऋण दिस'18 के बकाया ऋण कि सापेक्षता में 31% है।

## वाणिज्यिक उधारियों में अनर्जक आस्ति का प्रवाह

वाणिज्यिक ऋणों के संबंध में समग्र एनपीए की दर जन.'20 में 17.4% और दिसं.'19 में 17.3% रही, जिसमें दिसं'18 के 17.5% से मामूली कमी हुई, लेकिन यह सितं'19 के 16.8% से अधिक है। अलग-अलग खंडों की और अधिक पड़ताल से यह ज्ञात होता है कि माइक्रो 1, माइक्रो 2 और लघु खंडों में एनपीए की दरें सीमित दायरे में बनी रहीं।

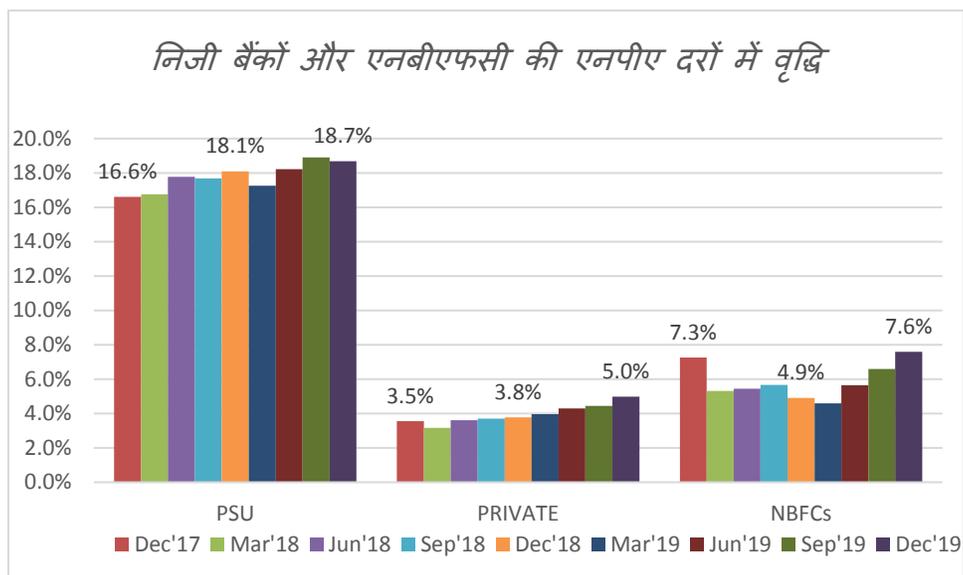
एमएसएमई खंड विशेष के भीतर, वृहद धनराशि के जोखिम ऋणों में एनपीए की दरें अपेक्षाकृत अधिक हैं। इस प्रवृत्ति का अपवाद एक अत्यंत ही छोटा हिस्सा (10 लाख रु. से कम का जोखिम ऋण) है, जिसकी उच्चतर एनपीए दर दिसं.'19 में ~ 11.3% है। मध्यम और बड़े नैगम खंडों ने भी दिसं.'19 में एनपीए दर क्रमशः 18.7% और 19.1% तक प्रतिदर्शित किए हैं, जो कि सितं.'19 की तुलना में अधिक है।

प्रदर्श्य 11: खंडवार एनपीए दर



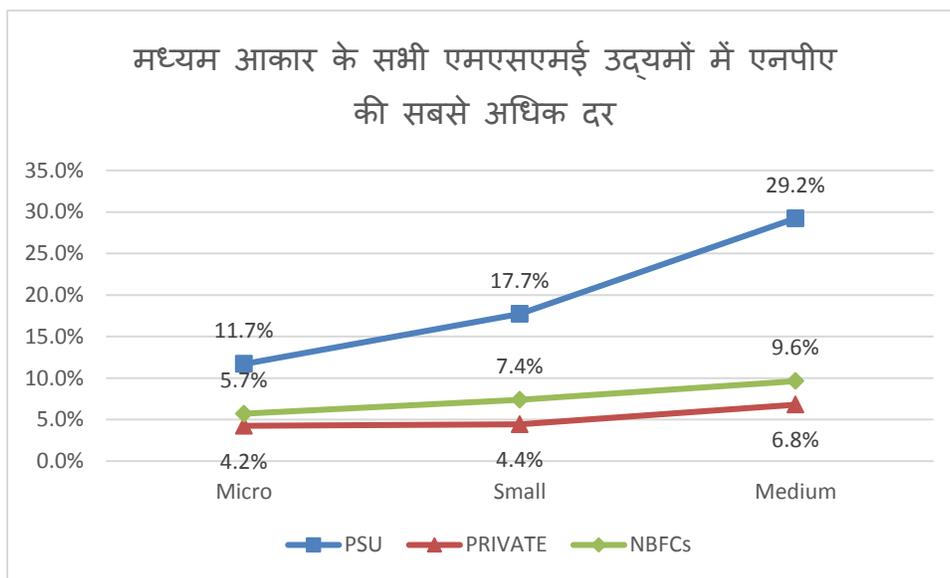
सभी ऋणदात्री संस्थाओं में एमएसएमई संबंधी एनपीए की दर: निजी बैंकों में एमएसएमई खंड विशेष में 3% - 5% की सीमा में एनपीए की स्थिति दिखाई देती है। इसी सीमा में, नए निजी क्षेत्र के बैंकों में औसतन न्यूनतम अपचार की दरें दिखाई देती हैं। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का एनपीए का स्तर दिसं'18 में 18.1% से बढ़कर दिसं'19 में 18.7% हो गया है। एनबीएफसी ने भी दिसं'19 को समाप्त तिमाही के दौरान एनपीए दरों में वृद्धि दर्ज की है।

प्रदर्श्य12: ऋणदाताओं के स्वरूप के अनुसार एमएसएमई क्षेत्र में एनपीए की दरें



लघु और मध्यम खंडों की तुलना में सूक्ष्म खंड में एनपीए की दर कम रही है। मध्यम आकार वाले सभी एमएसएमई उद्यमों में एनपीए की दर सबसे अधिक है।

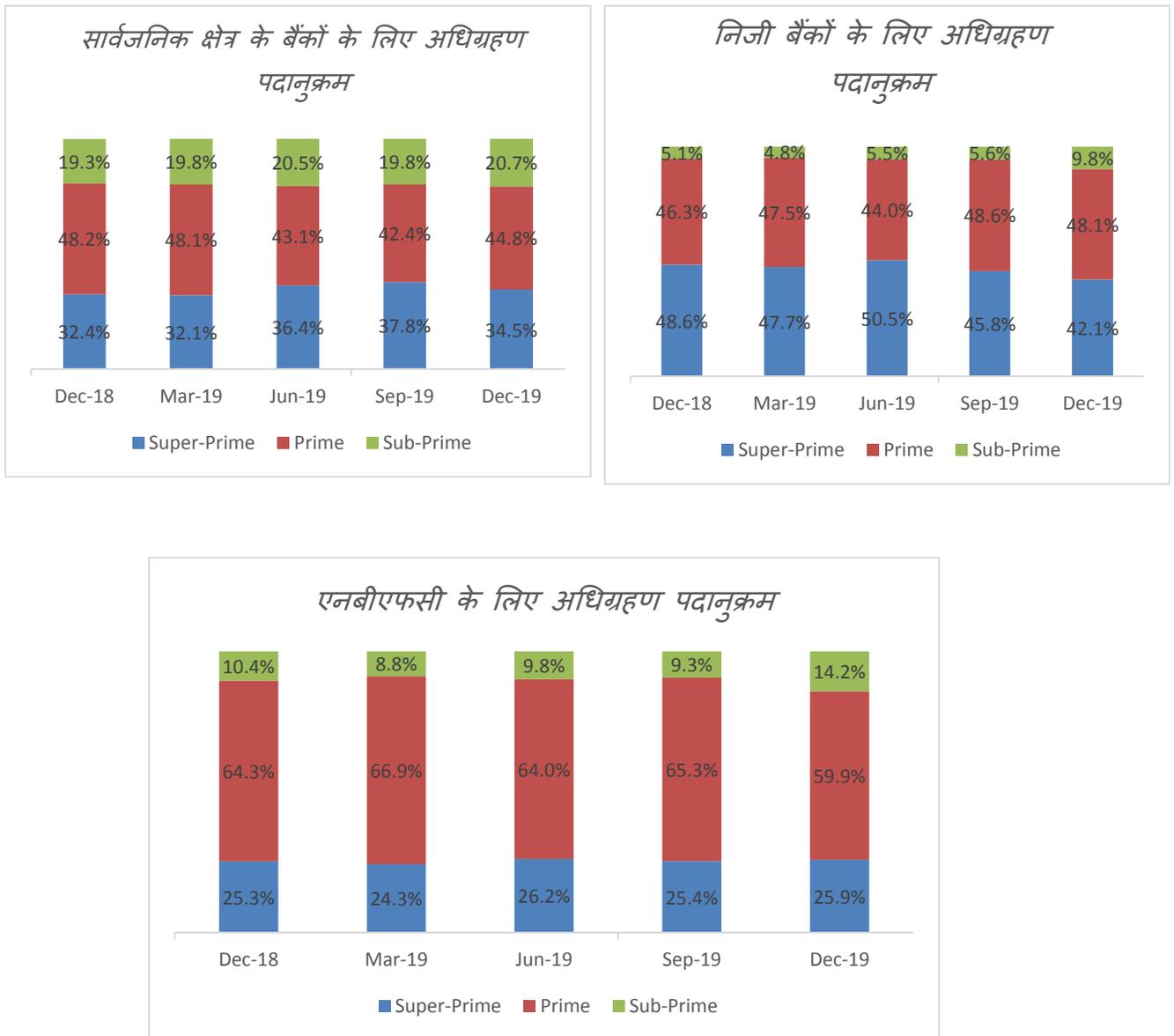
प्रदर्श्य13: ऋणदाताओं के स्वरूप के अनुसार एमएसएमई क्षेत्र में एनपीए की दरें



## अधिग्रहण संबंधी जोखिम का स्वरूप

यद्यपि, सभी उधारदाताओं के लिए अपचार की स्थिति में वृद्धि हुई है और उनका मंदी के बुरे प्रभावों के चपेट में आकर और कोविड-19 की वैश्विक महामारी से उत्पन्न मंदी के कारण एनपीए में और उछाल होने की संभावना है। तथापि, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के लिए नए एमएसएमई ऋण मंजूरीयों से संबंधित ऋण की गुणवत्ता में निरंतर सुधार परिलक्षित हो रहा है, पर एनबीएफसी और निजी बैंकों के लिए इस स्थिति में गिरावट देखी जा रही है।

प्रदर्श्य14: सभी ऋणदाताओं के बीच एमएसएमई में ऋण-अधिग्रहण का स्वरूप



अति-प्रमुख :सीएमआर-1-3; प्रमुख :सीएमआर-4-6, गौड़ :सीएमआर-7-10



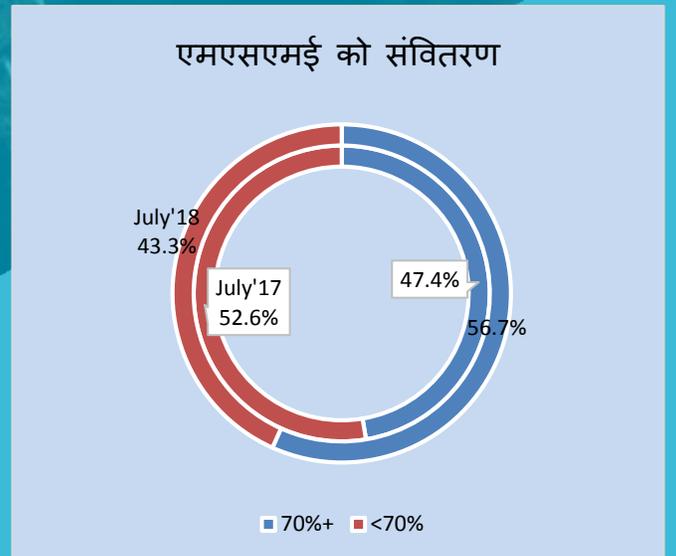
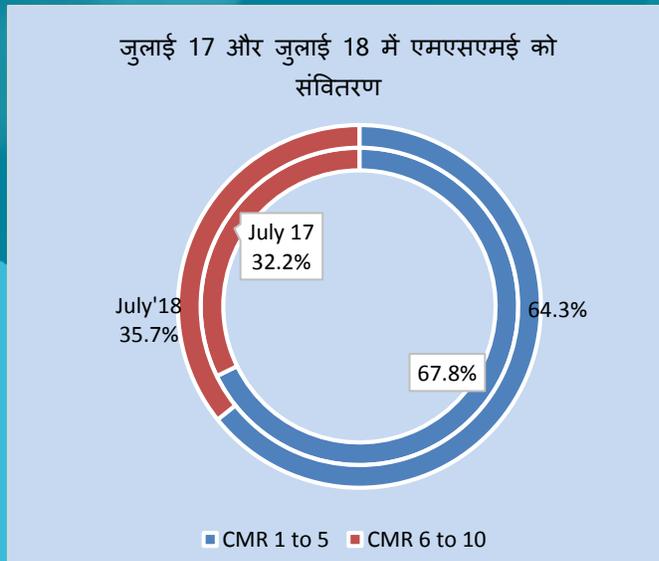
## संकटकाल में संरचनात्मक दृष्टि से सुदृढ़ एमएसएमई उद्यम

पिछले कुछ वर्षों में भारत का ऋण उद्योग - विमुद्रीकरण, जीएसटी के कार्यान्वयन, 2018 के दौरान सशक्त ऋण वृद्धि, निजी क्षेत्र के बैंकों के लिए पीसीए ढांचे, एनबीएफसी चलनिधि संकट, बाद की आर्थिक मंदी और कोविड-19 महामारी की वर्तमान जैसी विभिन्न स्थितियों का साक्षी रहा है। अच्छे उधारकर्ताओं की पहचान करना और उन्हें निधि प्रदान करना भी महत्वपूर्ण है - एमएसएमई उद्यम जिन्होंने लगातार मजबूत संरचनात्मक स्थिति दिखाई है, वर्तमान स्थिति में वित्तीय सहायता प्रदान किए जाने के योग्य हैं। अध्ययन का उद्देश्य ऐसे एमएसएमई को वर्गीकृत करना है, जो महामारी की स्थिति और इसके बाद आने वाली मंदी से निपटने के लिए संरचनात्मक रूप से मजबूत हैं। संरचनात्मक रूप से मजबूत एमएसएमई उद्यमों में वित्तीय व्यवहार के कुछ समान तौर-तरीके होंगे।

1. उनका ऋण का कम स्तर होगा और इसके कारण ऐसे एमएसएमई उधारकर्ता की ओर से बकाया देय राशि कम होगी। हालांकि आरबीआई ने हाल ही में चुकौती विषयक स्थगन प्रदान किया है, जो सभी प्रकार के उधारकर्ताओं की मदद करेगा, तथापि इस संदर्भ में यह बात महत्वपूर्ण है कि तालाबंदी की स्थिति में जाने वाला ऐसा उद्यम जिसका ऋण-भार ज्यादा है, कुछ तनाव से गुजरा ही होगा और इस बात ने किसी न किसी रूप में उसके व्यवसाय मॉडल को प्रभावित किया होगा। सिबिल एमएसएमई रैंक(सीएमआर) द्वारा भी एमएसएमई उधारकर्ता की ऋणभारिता स्थिति को बतौर एक कारक विचार में लिया जाता है और इसका उपयोग ऋणभारिता स्तर परिभाषित करने वाले सूचक के तौर पर किया जा सकता है।
2. संरचनात्मक रूप से मजबूत एमएसएमई उद्यमों में उच्च चलनिधि होगी। आपूर्ति शृंखलाएं वस्तुतः ठहर गई हैं, जिससे कार्यशील पूंजी का अंतराल और बढ़ता जा रहा है। उच्च चलनिधि वाले उधारकर्ता, विस्तारित कार्यशील पूंजी चक्रों को परिचालित कर सकने की बेहतर स्थिति में होंगे। कार्यशील पूंजी के उपयोग की मात्रा चलनिधि की स्थिति के बारे में इशारा करती हैं। क्योंकि अत्यधिक तरल उधारकर्ता अपनी कार्यशील पूंजी की आहरण सीमा का कम उपयोग करते हैं।

संरचनात्मक रूप से मजबूत बनाम कमजोर इकाइयों के बारे में पूर्वानुमान के लिए मापदंडों की पहचान करने के लिए, एमएसएमई की चूक की दरों को दो सूरतों में मापा जाता है। सीएमआर (सिबिल एमएसएमई रैंक) और एमएसएमई इकाइयों द्वारा किए गए ऋण उपयोग का अध्ययन दो परिदृश्यों के तहत किया जाता है - परिदृश्य -1, जब जीएसटी को जुलाई 2017 तिमाही में शुरू किया गया था, जबकि परिदृश्य -2 में वह अवधि शामिल है जब ऋण संवृद्धि अपने चरम पर थी किन्तु एमएसएमई के विकास में मार्च 2019 के बाद मंदी आना शुरू हुई। परिदृश्य-1 जुलाई'17 (टी) से जून'18 (टी + 12) है और परिदृश्य-2 जुलाई'18 से जून'19 है। समय अवधि टी के दौरान सक्रिय इकाइयों का सीएमआर और संस्थाओं के ऋण उपयोग के स्तर का विश्लेषण किया गया है और 12 महीनों के बाद इसकी डिफॉल्ट दर देखी गयी है। एमएसएमई के ऋणदात्री परिमंडल में हाल में घटित कतिपय दबावकारी घटनाओं को शामिल करने के लिए ही इन परिदृश्यों को चुना गया है। जुलाई'17 जीएसटी कार्यान्वयन की वह कालावधि है जब एमएसएमई इकाइयों ने ने औपचारिक ऋण प्रणाली में प्रवेश शुरू किया। और सितंबर 2018 आईएलएफएस की घटना के साथ एनबीएफसी संकट की शुरुआत थी। एमएसएमई क्षेत्र में ऋण संवृद्धि मार्च 2019 के बाद ही धीमा होना शुरू हो गई।

प्रदर्श्य 15: दो परिदृश्यों में रैंक और उपयोग स्तर का वितरण



सीएमआर-1 से 5 में इकाइयों को कम जोखिम वाले सेगमेंट के रूप में वर्गीकृत किया गया है और सीएमआर-6-10 को उच्च जोखिम वाले सेगमेंट के रूप में वर्गीकृत किया गया है। जुलाई 17 में, एमएसएमई का 68% सीएमआर- 1 से 5 और शेष 32% सीएमआर-6 से 10 ग्रेड में था। जबकि, दूसरे परिदृश्य में, एमएसएमई के 64% जहां कम जोखिम वाले सीएमआर ग्रेड और 36% जोखिमपूर्ण ग्रेड में हैं।

एमएसएमई को 70% (<70%) और > 70% से कम के उपयोग स्तर के आधार पर आगे वर्गीकृत किया गया है। परिदृश्य 1 में, जुलाई 17 में, एमएसएमई का 53% <70% वर्ग में था, जबकि परिदृश्य 2 में, 43% एमएसएमई इस वर्ग में थे।

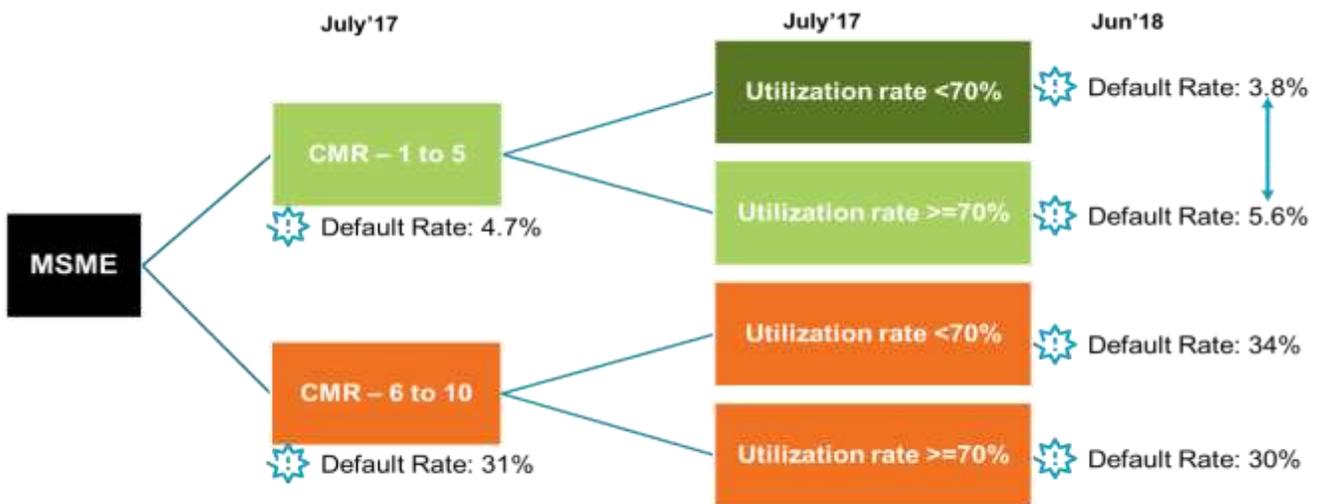
## परिदृश्य 1: जून'18 में चूक की दर

जुलाई'17 को सक्रिय एमएसएमई उद्यमों की ऋणभारिता और चलनिधि प्रोफाइल पर विचार किया गया है और 1 वर्ष की समयावधि के पश्चात यथा जून'18 को चूक दर देखी गई है।

अध्ययन से पता चलता है कि जो इकाइयाँ जुलाई -17 में सीएमआर -1 से 5 जोखिम ग्रेड में थीं, उनमें 1 वर्ष के बाद चूक की दर 4.7% है, जबकि समान समय अवधि के लिए सीएमआर - 6 से 10 ग्रेड में रही इकाइयों की डिफॉल्ट दर 31% थी। चलनिधि उपायों के रूप में उपयोग मापक का प्रयोग करते हुए यह पाया गया है कि <70% और >= 70% सेगमेंट में इकाइयों की चूक की दर में एक बड़ा अंतर है। कम जोखिम वाले एमएसएमई उद्यम (सीएमआर 1-5) के लिए, ऋण सीमा उपयोग के <70% से कम ऋण उपयोग के साथ इकाइयाँ यथोचित रूप से 3.8 % की चूक दर दिखा रही हैं। लेकिन उच्च ऋण उपयोग के साथ कम जोखिम ग्रेड में रहने वाली एमएसएमई इकाइयों की चूक की दर 5.6 % है। चूक की दर को 1 दिन के विलंब से लेकर एनपीए में जोड़े जाने तक वाले उधारकर्ताओं के अनुपात के रूप में परिभाषित किया गया है।

वे एमएसएमई जो कि कम उपयोग दर के साथ जुलाई'17 में सीएमआर-6 से 10 ग्रेड में थे, उनकी डिफॉल्ट दर 34% है, जबकि उन इकाइयों के लिए जिनका उपयोग का स्तर >= 70% रहा उनके लिए यह 30% है।

**प्रदर्श्य 16: परिदृश्य 1 में चूक की दरें (अवधि जुलाई'17 से जून'18)**



Source: TransUnion CIBIL, commercial database



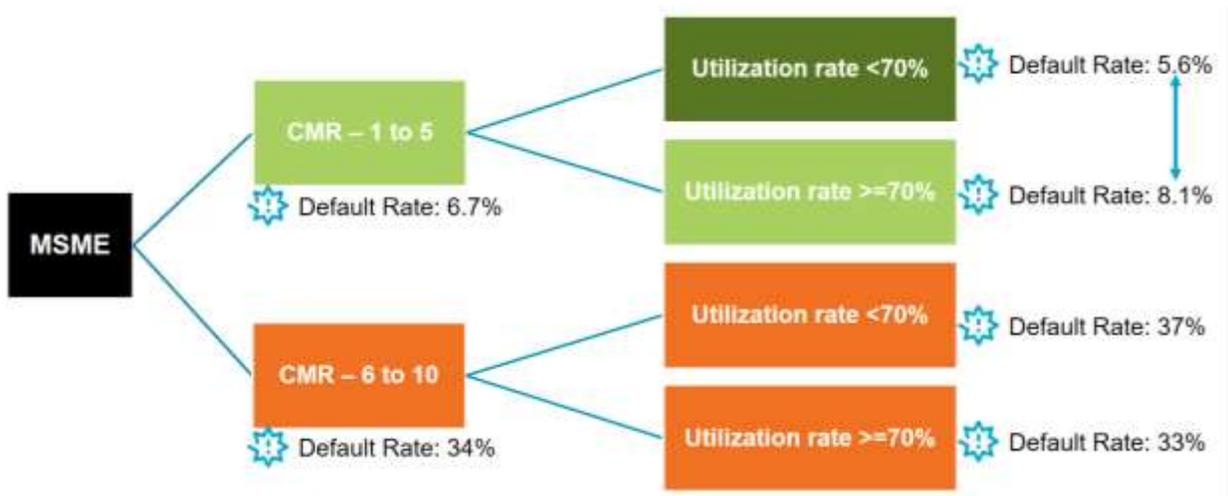
## परिदृश्य 2: जून'19 में चूक की दर

जुलाई'18 को सक्रिय एमएसएमई उद्यमों की ऋणभारिता और चलनिधि प्रोफाइल पर विचार किया गया है और 1 वर्ष की समयावधि के पश्चात यथा जून'19 को चूक दर देखी गई है।

अध्ययन से पता चलता है कि जो इकाइयाँ सीएमआर- 1 से 5 जोखिम ग्रेड में जुलाई'18 में थीं, उनकी 1 वर्ष के बाद डिफॉल्ट दर 6.7% थी, जबकि सीएमआर- 6 से 10 में रहने वाली इकाइयों की चूक की दर उल्लेखनीय रूप से 34 % स्तर पर काफी अधिक थी। कम जोखिम वाले एमएसएमई (सीएमआर-1 से 5) के लिए, ऐसी इकाइयों जिनका कुल ऋण सीमा उपयोग <70% से कम रहा, उनकी चूक दर 5.6 % है। लेकिन उच्च ऋण उपयोग के साथ निम्न जोखिम ग्रेड में होने वाली एमएसएमई इकाइयों की चूक की दर 8.1% पर है

वे उधारकर्ता जो कि कम उपयोग दर के साथ जुलाई'18 में सीएमआर-6 से 10 ग्रेड में थे, उनकी डिफॉल्ट दर 37% है, जबकि उन इकाइयों के लिए जिनका उपयोग का स्तर  $\geq 70\%$  रहा उनके लिए यह 33% है।

प्रदर्श्य 17: परिदृश्य 2 में चूक की दरें (अवधि जुलाई'18 से जून'19)

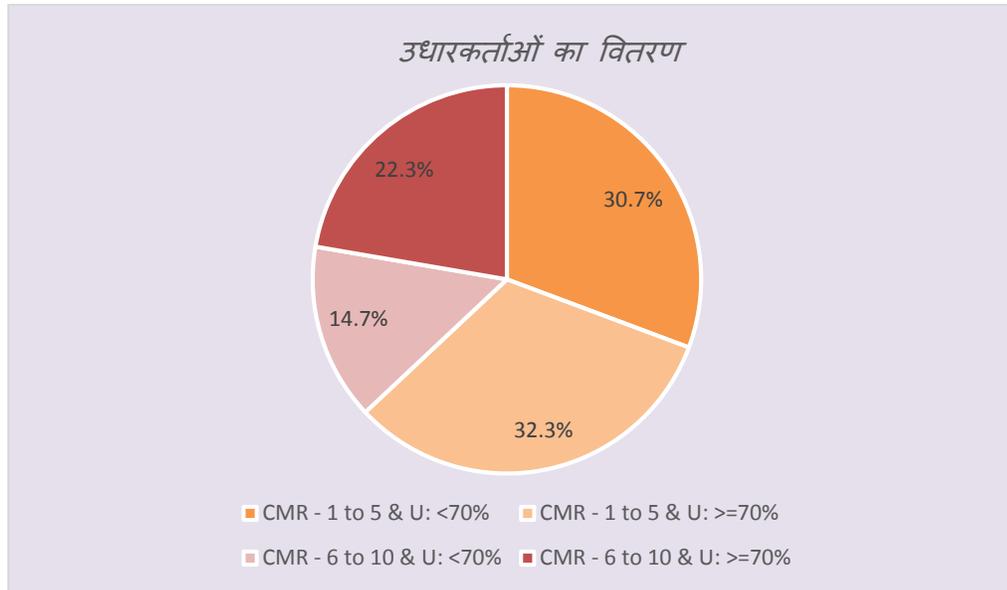


दोनों परिदृश्यों के अंतर्गत यह देखा गया है कि सीएमआर- 1 से 5 के रैंक वाले सेगमेंट में आने वाली इकाइयों का समूह सबसे स्थिर समूह है तथा इसके साथ में उपयोग कारक जोड़ देने से चूक की दरों में भारी वृद्धि प्रकट होती है। इसलिए मौजूदा गत्यात्मक परिवेश में ऋण निगरानी के हिस्से के रूप में सीएमआर और चलनिधि में होने वाले बदलाव पर नज़र जमाए रखना बहुत महत्वपूर्ण है।

## एमएसएमई की मौजूदा चलनिधि और ऋणभारिता की स्थिति

यथा जनवरी'20 को, 63 % सक्रिय एमएसएमई संरचनात्मक रूप से मजबूत एमएसएमई इकाइयों के घटक सीएमआर- 1 से 5 के निम्नतर जोखिम वाले खंड में हैं, जबकि 37% एमएसएमई सीएमआर- 6 से 10 में हैं। इन इकाइयों द्वारा कार्यशील-पूंजी सीमाओं के उपयोग की दरों का भी विश्लेषण किया गया है। 31% एमएसएमई संरचनात्मक रूप से मजबूत एमएसएमई इकाइयों के घटक (सीएमआर- 1 से 5 और <70% कार्यशील पूंजी का उपयोग स्तर) में हैं जो उधारदाताओं को इस खंड को अच्छी पोर्टफोलियो गुणवत्ता सुनिश्चित करते हुए उधार देने के अच्छे अवसर प्रदान करता है।

**प्रदर्श्य 18: एमएसएमई का जनवरी '20 में वितरण**





## निष्कर्ष

भारत के बैंकों और ऋणदात्री संस्थाओं ने भारत के एमएसएमई क्षेत्र को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पिछले 2 वर्षों में, तुलन-पत्र के अनुसार एमएसएमई क्षेत्र की ऋण जोखिम-राशि में ₹2 लाख करोड़ से अधिक की वृद्धि हुई है। माइक्रो (सूक्ष्म) सेगमेंट (एग्रीगेट क्रेडिट एक्सपोज़र <1 करोड़ सहित), वर्ष 2019 में ₹92,262 करोड़ के नए ऋण संवितरणों के साथ, सबसे बड़ा लाभार्थी रहा है। प्रत्येक ऋणदाता ने एक विशेष भूमिका निभाई है, चाहे वह एनबीएफसी के मामले में राजस्थान हो, निजी बैंकों के मामले में तमिलनाडु हो या सबसे बड़ी बाजार हिस्सेदारी रखने वाले सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक हों। और कोविड महामारी के प्रकोप से उत्पन्न इस चुनौतीपूर्ण समय में बैंक एवं अन्य ऋणदात्री संस्था, एमएसएमई क्षेत्र के साथ अपने संबंधों को सशक्त बनाने के अवसरों की तलाश करेंगे।

कोविड महामारी का प्रकोप, बाजार की मांग में गिरावट और नए तरीके से काम करने से बढ़ी हुई परिचालन लागत के कारण एमएसएमई उद्यमों की लाभप्रदता को प्रभावित करेगा। ऐसी स्थिति में, अधिस्थगन प्रदान किया जाना रिजर्व बैंक का अधिदेश है, लेकिन असली चुनौती उन एमएसएमई उद्यमों को, जो इस स्थगन का उपयोग अपने नकदी प्रवाह को वापस लाने के लिए कर रहे हैं, ऐसे एमएसएमई उद्यमों से अलग करना है जो इस स्थगन का प्रयोग कर सिर्फ चूक के चक्र को टाल रहे हैं। जीएसटी कार्यान्वयन और आईएल-एंड-एफएस संकट की घटनाओं पर आधृत परिदृश्य परीक्षण अध्ययन यह बताता है कि संरचनात्मक रूप से मजबूत एमएसएमई उद्यमों ने हमेशा झंझावाती दौर को बेहतर तरीके से पार किया है।



## सिडबी के बारे में

भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी), एमएसएमई क्षेत्र के संवर्धन, वित्त पोषण और विकास के लिए और समान गतिविधियों में संलग्न संस्थानों के कार्यों के समन्वय के लिए प्रमुख वित्तीय संस्था है। सिडबी के व्यावसायिक क्षेत्र में एमएसएमई शामिल हैं, जो उत्पादन, रोजगार और निर्यात के रूप में राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। सिडबी एमएसएमई क्षेत्र की वित्तीय और विकासात्मक जरूरतों को क्रेडिट प्लस दृष्टिकोण से पूरा करता है ताकि इसे मजबूत, जीवंत और विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाया जा सके। अधिक जानकारी के लिए [www.sidbi.in](http://www.sidbi.in) देखें ।

## ट्रांसयूनियन सिबिल के बारे में

ट्रांसयूनियन सिबिल भारत की अग्रणी क्रेडिट सूचना कंपनी है और विश्व भर में क्रेडिट जानकारी के वृहतर भंडारों में से एक है। हमारे पास 3000 से अधिक सदस्य हैं-जिनमें सभी अग्रणी बैंक, वित्तीय संस्थाएँ, गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियाँ और हाउसिंग फाइनेंस कंपनियाँ शामिल हैं- और व्यक्तियों और व्यवसायों के 900 मिलियन से अधिक क्रेडिट रिकॉर्ड का रखरखाव करती हैं।

हमारा ध्येय सूचना समाधान का सृजन है, जिससे व्यवसाय संवृद्धि सुलभ हो और उपभोक्ताओं को क्रेडिट और अन्य सेवाओं की त्वरित एवं सस्ती पहुंच में सक्षमता प्रदान करता है। हम जोखिम प्रबंधन के माध्यम से अपने सदस्यों के लिए अमूल्य आधार का सृजित करते हैं और लागत कम करने और संविभाग की लाभप्रदता बढ़ाने के लिए उपयुक्त उधार रणनीतियाँ तैयार करने में मदद करते हैं। उपभोक्ता और वाणिज्यिक उधारकर्ताओं के बारे में व्यापक, विश्वसनीय जानकारी से, वे व्यक्तियों और व्यवसायों के बारे में सुदृढ़ ऋण निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। सूचना- शक्ति के माध्यम से, ट्रांसयूनियन सिबिल एक सुदृढ़ अर्थव्यवस्था निर्माण के लिए हमारे सदस्यों के ऋण निवेश अभियान और वित्तीय समावेशन के लिए प्रयासरत है।

अच्छाई के लिए हम इस जानकारी की मांग करते हैं।

### अस्वीकरण

यह एमएसएमई प्लस रिपोर्ट (रिपोर्ट) ट्रांसयूनियन सिबिल लिमिटेड (टीयू सिबिल) ने तैयार की है। रिपोर्ट को देखने और उपयोग करके उपयोगकर्ता यह स्वीकार एवं पुष्टि करता है कि यह उपयोग इस अस्वीकरण के अधीन है। यह रिपोर्ट जानकारी के परितुलन पर आधारित है, जो वस्तुतः टीयू सिबिल के सदस्य क्रेडिट संस्थानों द्वारा प्रदान की गयी हैं। यद्यपि टीयू सिबिल रिपोर्ट तैयार करने में उचित सावधानी बरतता है, तथापि टीयू सिबिल सटीकता, त्रुटियों और / या क्रेडिट संस्थानों द्वारा उन्हें प्रस्तुत त्रुटिपूर्ण या अपर्याप्त जानकारी के कारण हुई चूक के लिए उत्तरदायी नहीं होगा। इसके अलावा, टीयू सिबिल किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए रिपोर्ट और / या इसकी उपयुक्तता में सूचना की पर्याप्तता या पूर्णता की गारंटी नहीं देता है और न ही टीयू सिबिल रिपोर्ट की किसी भी निविष्टि पर निर्भरता के लिए जिम्मेदार है और टीयू सिबिल इस तरह के सभी उत्तरदायित्वों को स्पष्ट रूप से अस्वीकार करता है। यह रिपोर्ट किसी भी आवेदन, उत्पाद को निरस्त करने / उसे अस्वीकार करने या उसकी स्वीकृति के लिए सिफारिश नहीं है और न ही (i) उधार देने या न देने के लिए टीयू सिबिल की कोई सिफारिश है ; (ii) संबंधित व्यक्ति / संस्था के साथ किसी भी वित्तीय संव्यवहार करने या नहीं करने के लिए भी कोई सिफारिश नहीं है। रिपोर्ट में निहित जानकारी परामर्श नहीं है और उपयोगकर्ता को इस रिपोर्ट में निहित जानकारी के आधार पर कोई भी निर्णय लेने से पहले स्वयं की राय में विवेकपूर्ण सभी आवश्यक विश्लेषण करना चाहिए। रिपोर्ट का प्रयोग ऋण सूचना संबंधी कपनियों के (विनियम) अधिनियम, 2005, ऋण सूचना संबंधी कपनियों के विनियम, 2006, ऋण सूचना संबंधी कपनियों के लिए नियम, 2006 के प्रावधानों के अनुसार अभिशासित है। पूर्व अनुमोदन के बिना रिपोर्ट के किसी भी अंश की प्रतिलिपि न तो बनाई, परिचालित, प्रकाशित की जानी चाहिए।



TransUnion  CIBIL

ट्रान्सयूनियन सिबिल

[पूर्व क्रेडिट इन्फॉर्मेशन ब्यूरो (इंडिया) लिमिटेड

सिन /CIN: U72300MH2000PLC128359

P: 6638 4600

F: 6638 4666

W: [transunioncibil.com](http://transunioncibil.com)

वन इंडियाबुल सेंटर , टावर -2 ए , 19वीं मंजिल

सेनापति बापट मार्ग, एलिफीन्स्टन रोड,

मुंबई - 400 013.

